Topic no.40

ऊर्जा संक्रमण सूचकांक

अत्यावश्यक 50 विषय

प्रीलिम्स 2019 के लिए

क्यों अत्यावश्यक विषय श्रृंखला महत्वपूर्ण है?

2017 के प्रीलिम्स में, 50 अत्यावश्यक विषय श्रृंखला में 9 प्रश्न शामिल थे।

2018 की प्रारंभिक परीक्षा में, 40 अत्यावश्यक विषय श्रृंखला में 8 प्रश्न शामिल थे।

2019 के प्रीलिम्स में, ...

Telegram पर अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए, हमारे चैनल @UpscPrepMate से जुड़ें

जुड़ने के लिए यहाँ क्लिक करें

पुस्तकें खरीदने के लिए

पर क्लिक करें

Whatsapp पर अध्ययन सामग्री प्राप्त करने के लिए, अपना नाम और शहर Whatsapp नंबर पर भेजें

75978-40000

ऊर्जा संक्रमण सूचकांक (Energy transition index)

ऊर्जा संक्रमण सूचकांक (ETI) विश्व आर्थिक मंच (World Economic Forum) द्वारा जारी किया गया एक वार्षिक सूचकांक है। सूचकांक देशों को इस आधार पर श्रेणीबद्ध करता है कि प्रत्येक देश अपनी ऊर्जा सुरक्षा तथा पहुंच और पर्यावरणीय स्थिरता तथा सामर्थ्य के बीच संतुलन बिठाने में कितना सक्षम हैं।

सूचकांक प्रत्येक देश की भविष्य की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए जरूरी दोनों मानकों 'ऊर्जा प्रणाली की वर्तमान स्थिति' और 'संक्रमण तत्परता' को ध्यान में रखता है।

सूचकांक का 'संक्रमण तत्परता' घटक छह व्यक्तिगत संकेतकों को ध्यान में रखता है: पूंजी और निवेश, विनियमन और राजनीतिक प्रतिबद्धता, संस्थान और शासन, संस्थान और अभिनव व्यावसायिक वातावरण, मानव पूंजी और उपभोक्ता भागीदारी, और ऊर्जा प्रणाली संरचना।

2019 के सूचकांक में भारत का प्रदर्शन

2019 की रिपोर्ट में भारत ने 115 अर्थव्यवस्थाओं में से 76 वां स्थान हासिल किया है (2018 में 114 अर्थव्यवस्थाओं में से भारत 78 वें स्थान पर था) | जबकि 'संक्रमण तत्परता' के आधार पर भारत ने 45वां स्थान हासिल किया है, 'ऊर्जा प्रणाली की वर्तमान स्थिति' के आधार पर भारत काफी पीछे 97 वें स्थान पर है।

निकले स्थान के बावजूद, भारत ब्रिक्स ब्लॉक की उभरती अर्थव्यवस्थाओं में से दूसरा सर्वश्रेष्ठ देश है। ब्राज़ील ने 46 वां स्थान हासिल किया है और चीन 82 वें स्थान के साथ ब्रिक्स अर्थव्यवस्थाओं में सबसे निचले स्थान पर है।

वहीँ स्वीडन ने पहला स्थान और स्विट्जरलैंड और नॉर्वे ने क्रमशः दूसरा व् तीसरा स्थान हासिल किया है ।

छोटी अर्थव्यवस्थाओं ने 'तत्परता' के आधार पर उच्च अंक प्राप्त किए हैं। ग्लोबल वार्मिंग के प्रति सबसे बड़ी चुनौती दुनिया के सबसे बड़े उत्सर्जकों के बीच ऊर्जा मिश्रण को बदलने की तत्परता की कमी है।